पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

डॉ० कलाम की प्रतिमा लगने से कालेज की विशेषता में वृद्धि हुई - राज्यपाल

जीवन की स्पर्धा की तैयारी छात्र जीवन से करें - श्री नाईक

12 जून, 2016

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक ने आज सरदार भगत सिंह कालेज मोहान में पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न स्व0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम की प्रतिमा का अनावरण एवं 'ओपन आडिटोरियम' का उद्घाटन किया। इस अवसर पर कुलपति ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय, पूर्व डीजीपी श्री विक्रम सिंह, स्वामी मुक्तिनाथानंद महाराज, समाजसेवी श्री करूणा शंकर ओझा सहित अन्य विशिष्ट जन व छात्र-छात्रायें उपस्थित थे।
राज्यपाल ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि उच्च शिक्षा में ज्ञान और संस्कार मिलते हैं तो अच्छी शिक्षा प्राप्त होती है। कालेज का नाम शहीद भगत सिंह से जुड़ा है। जब नाम जुड़ता है तो छात्र, शिक्षक, प्राचार्य एवं संचालक का दायित्व होता है कि नाम के अनुसार कार्य निष्पादित किया जाये। कालेज परिसर में डॉ० कलाम की प्रतिमा लगने से कालेज की विशेषता में वृद्धि हुई है। छात्र एवं महाविद्यालय परिवार डॉ० कलाम के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर ध्यान दे। उन्होंने कहा कि डॉ० कलाम के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर देश को आगे बढ़ाने का कार्य करें।

श्री नाईक ने कहा कि डॉ० कलाम आम परिवार से निकलकर देश के सर्वोच्च पद पर पहुँचे। वे भारतीय संस्कृति के पुजारी थे। गीता, कुरान और बाईबिल की समानता बताने का उनका अपना दृष्टिकोण था। राष्ट्रपति पर के दायित्वों से निवृत्त होने के बाद वे अंतिम सांस तक शिक्षक की भूमिका में देश की पूंजी युवा वर्ग की शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ाने के लिए सक्रिय रहे। इतिहास में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसे पढ़ाते-पढ़ाते मृत्यु प्राप्त हुई हो। उनका पूरा जीवन विज्ञाननिष्ठ रहा। डॉ० कलाम ने अणु ऊर्जा के प्रयोग और सफल परीक्षण का नेतृत्व किया। उन्होंने कहा कि विकसित देशों ने भारत पर आर्थिक प्रतिबंध लगा दिया मगर अणु परीक्षण से भारतीयों का सिर गर्व से ऊंचा हो गया।

राज्यपाल ने कहा कि डॉ० कलाम ने कहा था कि युवा शक्ति देशी की पूंजी है। 2020 तक भारत विश्व का सबसे युवा देश होगा। हम इस पूंजी के उचित मार्गदर्शन से देश के लिए उपयोग कर सकते हैं। राज्यपाल ने छात्र-छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि जीवन की स्पर्धा की तैयारी छात्र जीवन से करें। कालेज उन छात्रों से पहचाना जाता है जो समाज को कुछ देते हैं। उन्होंने व्यक्तित्व विकास के चार मंत्र बताते हुए कहा कि सफल भविष्य के लिये सदैव प्रसन्नचित रह कर मुस्कराते रहे। दूसरे के अच्छे गुणों की प्रशंसा करें तथा अच्छे गुणों को आत्मसात करने की कोशिश करें। दूसरों को छोटा न दिखाये और हर काम को और बेहतर ढंग से करने का प्रयास करें। कार्यक्रम में कुलपति श्री विनय पाठक, श्री करूणा शंकर ओझा सहित अन्य लोगों ने भी अपने विचार रखें।

अंजुम/ललित/राजभवन (205/8)

Sunday, 12th of June 2016

Sunday, 12th of June 2016
Inauguration Ceremony
of
"Dr. APJ Abdul Kalam Open Auditorium"
and
Unveiling of the Statue of
Former President of India
Bharat Ratna Dr. APJ Abdul Kalam
by
"SHRI RAM NAIK,
HON'BLE GOVERNOR,
UTTAR PRADESH."
at
"Sardar Bhagat Singh College"

Sunday, 12th of June 2016
Inauguration Ceremony
of
"Dr. APJ Abdul Kalam Open Auditorium"
and
Unveiling of the Statue of
Former President of India
Bharat Ratna Dr. APJ Abdul Kalam
by
"SHRI RAM NAIK,
HON'BLE GOVERNOR,
UTTAR PRADESH."
at